उर्मिला गोयल

आखिर जरूरी नहीं है टीवी देखना

रेडियो और पत्र-पत्रिकाओं का ध्यान प्रभाव से अधिक जानकारी पर

फ्रैंकफर्ट/ओडोर विश्वविद्यालय में हमारी कार्यशाला का विषय था *कौन बनेगा करोड़पति*। भारतीय टेलीविजन के विकास के लिए उसके महत्व पर चर्चा की गई। अमेरिका के *हू वांट्स टु बी ए मिलिनेयर* और जर्मनी के *वेर वर्ड मिलिनेयर* से इसकी तुलनाएं की गईं। मैं इस चर्चा में भाग नहीं ले पाई। मैंने न केवल कभी *कौन बनेगा करोड़पति* या उसका अमेरिकी संस्करण नहीं देखा था, बल्कि मैं इसके जर्मन संस्करण से भी अपरिचित थी। हालांकि मैं जर्मनी की राजधानी बर्लिन के मध्य में रहती हूं। मेरे पास टेलीविजन नहीं है।

मेरे माता-पिता के पास एक था। किशोरावस्था में मैं हमेशा उसके सामने रहती थी। मेरा दैनिक कार्यक्रम काफी सतर्कता से बनता था। हालांकि यह निजी टेलीविजन के दौर से पहले का समय था, ऐसे कई धारावाहिक या फिल्में थीं जिनको देखते समय मुझे किसी अवांछित अतिथि या अनियोजित यात्राओं का व्यवधान पसंद नहीं था। जब मैंने विश्व-विद्यालय में प्रवेश लिया, तब अपनी दिनचर्या के इस निर्धारण के खिलाफ एक सख्त कदम उठाया और अपने घर में टेलीविजन को प्रतिबंधित कर दिया। आश्चर्यजनक बात यह थी कि मुझे कभी उसकी कमी महसूस नहीं हुई। फिर कुछ वर्ष पहले, मैंने व्यवसाय में काफी यात्राएं करनी आरंभ कीं। होटलों के कमरों में हमेशा टेलीविजन होते थे, चाहे वे जर्मनी में हों, भारत में या नेपाल में। तो मैंने सोचा कि देखते हैं कि मैंने क्या मिस किया है, अपने ज्ञान को अद्यतन करती हूं और दुनिया के घटनाक्रम से परिचित होती हूं। मैंने टेलीविजन को चलाया। मैंने सभी बटन दबाए। मैंने टेलीविजनों के सामने काफी समय बिताया और सामान्यत: घूम-फिरकर बीबीसी वर्ल्ड सर्विस देखती थी। कुछ भी अधिक दिलचस्प प्रतीत नहीं हुआ। वह भी केवल दूसरा बेहतरीन विकल्प था। यदि वहां रेडियो होते, तो मैं उन्हें चलाती, बीबीसी वर्ल्ड सर्विस सुनती तथा कुछ संगीत सुनती। मैंने उसे प्राथमिकता दी होती। केवल दैनिक पत्र होटलों में घर का स्मरण दिलाते थे।

छाया: टी. नारायण

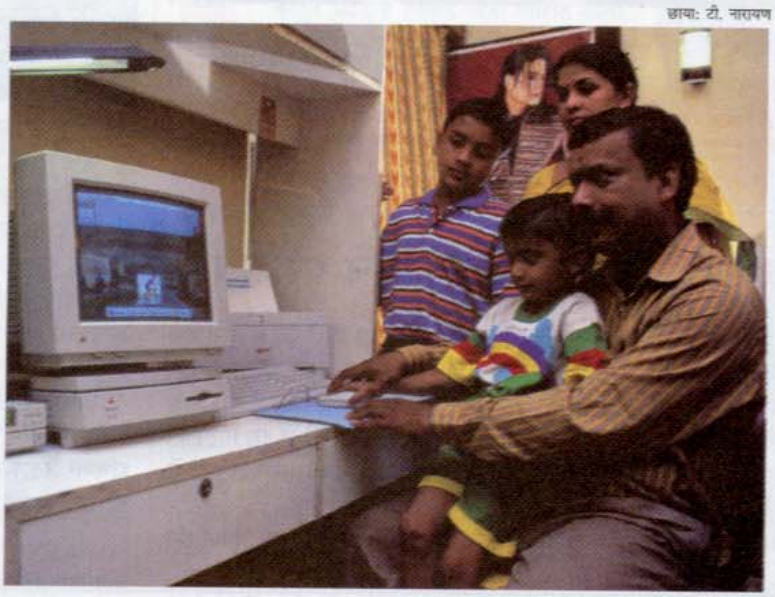

कभी-कभार टीवी देखना महत्वपूर्ण हो सकता है लेकिन इसमें काफी समय लगता है और इसके लिए दिनचर्या को अनुकूल बनाना होगा। नहीं पता कि लोगों को इतना समय कैसे मिलता है?

रेडियो, समाचारपत्र तथा पत्रिकाएं समाचार प्राप्त करने के मेरे स्रोत हैं। वहां मुझे उस पृष्ठभूमि की जानकारी मिलती है जो मैं चाहती हूं। वहां जानकारी हिलती तस्वीरों के बजाय शब्दों पर केंद्रित होती है। वहां जानकारी प्रभाव की अपेक्षा विषय-वस्तु पर केंद्रित होती है। उस जानकारी को मैं उतने धीमे या उतनी तेजी से ग्रहण कर सकती हूं, जितनी मुझे आवश्यकता या इच्छा है। टेलीविजन की खबरें मुझे सभी धारावाहिकों, शो तथा दूसरे दर्जे की फिल्मों की तरह खिझाती हैं। यदि मुझे कुछ शोरगुल की आवश्यकता होती है तो मैं रेडियो या सीडी प्लेयर चला देती हूं।

जर्मनी में भारतीय समाचारपत्र मुश्किल से मिलते हैं। उन्हें मेरे पास पहुंचने में कई सप्ताह लग जाते हैं। परंतु मैं इंटरनेट का प्रयोग कर सकती हूं। इसलिए मैं उन्हें ऑनलाइन पढ़ सकती हूं, बिना विलंब दक्षिण एशिया में घट रही घटनाओं के संपर्क में रह सकती हूं। यदि आवश्यक हो तो मैं ऑनलाइन छोटे फिल्म क्लिप भी देख सकती हूं। परंतु मैं शायद ही ऐसा करती हूं। यह प्रौद्योगिकी अभी पर्याप्त उन्नत नहीं है और उसके लाभ काफी कम हैं।

मैं स्वीकार करती हूं कि कभी-कभार टेलीविजन पर कुछ देखना महत्वपूर्ण हो सकता है। परंतु उसके लिए टेलीविजन कार्यक्रमों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। अपनी दिनचर्या को उसके अनुकूल ढालना होगा। फिर टेलीविजन देखने में काफी समय लगता है। मुझे नहीं पता कि लोगों को इतना समय कैसे मिलता है। मेरे पास तो समय नहीं है। मुझे अपना शोध करना होता है, घरेलू काम-काज करना होता है, मित्रों से मिलना होता है, समाचार-पत्र तथा पुस्तकें पढ़नी होती हैं, फुटबॉल खेलना होता है..मैं टेलीविजन कब देखूं?

परंतु मुझे फिल्में पसंद हैं। मैं हमेशा सिनेमाघर नहीं जा सकती। या सिनेमाघर वे फिल्में नहीं दिखाते जो मैं चाहती हूं। *मि. एंड मिसेज अय्यर* या *गुडनेस ग्रेशियस मी* जर्मनी में नहीं दिखाई जातीं। इसलिए मैंने एक वीएचएस प्लेयर खरीदा है, मेरा कंप्यूटर डीवीडी चला सकता है और मेरा नया बीमर मेरे लिविंग रूम में एक छोटा सिनेमाघर बना देता है। वहां मैं अपनी पसंद की फिल्में अपने पसंद के समय पर देख सकती हूं। मैं अपने मित्रों को अपने साथ फिल्में देखने के लिए आमंत्रित कर सकती हूं। यदि पर्याप्त समय हो। यह अब भी सबसे बड़ी रुकावट है।

बाकी एकमात्र समस्या यह है कि मैं टेलीविजन के बारे में चर्चाओं में भाग नहीं ले सकती। चाहे मैं *कौन बनेगा करोड़पति* या उसके जर्मन संस्करण के बारे में बहुत कुछ जानती हूं। समाचारपत्र, पत्रिकाएं तथा रेडियो उनके बारे में जानकारी देते हैं। इसलिए संभवत: मेरे पास उनकी पृष्ठभूमि पर बहुत से दर्शकों से अधिक जानकारी हो सकती है। परंतु बस मुझे उन्हें देखने का अनुभव नहीं है। मैंने अमिताभ बच्चन या गुंथर जॉच को संचालन करते नहीं देखा है। मैंने उस वातावरण को महसूस नहीं किया है। इसलिए मुझे स्वीकार करना होगा कि मुझमें थोड़े सामान्य ज्ञान का अभाव है। लेकिन मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है। ●

(उर्मिला गोयल फ्रैंकफर्ट/ओडोर विश्वविद्यालय, जर्मनी में सांस्कृतिक तथा सामाजिक मानव विज्ञान में शोधकर्ता हैं)